हल प्रश्न-पत्र सी. बी. एस. ई. अंक योजना सहित	सी.बी.एस.ई. 2018 कक्षा–XII Delhi/Outside Delhi	हिन्दी (केन्द्रिक)

समय : 3 घण्टे] **[अधिकतम अंक : 100**

निर्देश :

(1) इस प्रश्न-पत्र में **14** प्रश्न हैं।

(2) सभी प्रश्न **अनिवार्य** हैं।

(3) विद्यार्थी यथासंभव अपने शब्दों में उत्तर लिखें।

खण्ड–'क'

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 20-30 शब्दों में लिखिए : **15**

हिन्दी के बारे में या उसके विरोध के बारे में जब भी कोई हलचल होती है, तो राजनीति का मुखौटा ओढ़े रहने वाले भाषा व्यवसायी बेनक़ाब होने लगते हैं। उनकी बेचैनी समझ में नहीं आती। संविधान में स्पष्ट प्रावधानों के बाद भी यह अविश्वास का माहौल बनता क्यों है? यहाँ हम केवल एक ही प्रावधान को याद करें। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश देते हुए स्पष्ट कहा गया है : 'संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात् करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।'

यही सब देखकर हिन्दी के विषय में अक्सर यह लगने लगता है जैसे संविधान के संकल्पों का निष्कर्ष कहीं खो गया है और हम निर्माताओं के आशय से कहीं दूर भटक गए हैं। सहज ही मन में ये प्रश्न उठते हैं कि हमने संविधान के सपने को साकार करने के लिए क्या किया? क्यों नहीं हमारे कार्यक्रम प्रभावी हुए? क्यों और कैसे अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता हम पर और हमारी युवा एवं किशोर पीढ़ी पर इतनी हावी हो चुकी है कि इसी मिट्टी से जन्मी हमारी अपनी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में प्रतीत होता है। शिक्षा में, व्यापार और व्यवहार में, संसदीय, शासकीय एवं न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को वर्चस्व क्यों नहीं मिल पा रहा?

(क) भाषा व्यवसायी से क्या अभिप्राय है? उनकी पोल कब खुलने लगती है? **2**

(ख) संविधान में 'संघ' से आप क्या समझते हैं? हिन्दी भाषा को लेकर 'संघ' का क्या कर्तव्य बताया गया है? **2**

(ग) हिन्दी भाषा के विकास की आवश्यकता क्यों है? **2**

(घ) भारत की अन्य भाषाओं से लेखक का क्या तात्पर्य है? यहाँ उनका उल्लेख क्यों हुआ है? **2**

(ङ) 'अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता' से क्या तात्पर्य है? उसका क्या परिणाम हो रहा है? **2**

(च) यह कैसे कह सकते हैं कि हमारी अपनी भाषा का भविष्य संकट में है? **2**

(छ) हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं के वर्चस्व से आप क्या समझते हैं? यह कैसे संभव हो सकता है? **2**

(ज) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। **1**

2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 20-30 शब्दों में लिखिए : **1×5=5**

सहता प्रहार कोई विवश, कदर्य जीव
जिसकी नसों में नहीं पौरुष की धार है
करुणा, क्षमा हैं वीर जाति के कलंक घोर
क्षमता क्षमा की शूरवीरों का शृंगार है।

प्रतिशोध से हैं होती शौर्य की शिखाएँ दीप्त
प्रतिशोध-हीनता नरों में महापाप है,
छोड़ प्रीति-वैर पीते मूक अपमान वे ही
जिनमें न शेष शूरता का वह्नि-ताप है
जेता के विभूषण सहिष्णुता-क्षमा हैं किंतु
हारी हुई जाति की सहिष्णुता अभिशाप है।

सेना साजहीन है परस्व हरने की वृत्ति
लोभ की लड़ाई क्षात्र धर्म के विरुद्ध है
चोट खा परन्तु जब सिंह उठता है जाग
उठता कराल प्रतिशोध हो प्रबुद्ध है
पुण्य खिलता है चंद्रहास की विभा में तब
पौरुष की जागृति कहाती धर्मयुद्ध है।

(क) क्षमा कब कलंक और कब शृंगार हो जाती है?

(ख) प्रतिशोध किसे कहते हैं? वह कब आवश्यक होता है?

(ग) सहिष्णुता को विभूषण और अभिशाप दोनों क्यों माना गया?

(घ) कैसा युद्ध धर्म के विरुद्ध माना गया है?

(ङ) भाव स्पष्ट कीजिए—'पौरुष की जागृति कहाती धर्मयुद्ध है।'

खण्ड–'ख'

3. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए : **5**

(क) कम्प्यूटर : मेरे जीवन में

(ख) भारत की सामाजिक समस्याएँ

(ग) स्वाभिमान चाहिए, अभिमान नहीं

(घ) विकास के लिए शिक्षा आवश्यक

4. दूरदर्शन केन्द्र के निदेशक को नवीन साहित्यिक रचनाओं पर कार्यक्रम प्रसारित करने का आग्रह करते हुए लगभग 150 शब्दों में पत्र लिखिए। **5**

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 20-30 शब्दों में लिखिए : **1×5=5**

(क) 'पेज थ्री पत्रकारिता' का आशय समझाइए।

(ख) अंशकालिक पत्रकार किसे कहते हैं?

(ग) विशेषीकृत पत्रकारिता को संक्षेप में समझाइए।

(घ) 'बीट' से आप क्या समझते हैं?

(ङ) रेडियो की लोकप्रियता के क्या कारण हैं?

6. 'गाँव से मज़दूरों का पलायन' विषय पर लगभग 150 शब्दों में आलेख लिखिए। **5**

अथवा

हाल ही में पढ़ी गई यात्रा-वृतांतों की किसी पुस्तक की संतुलित समीक्षा लगभग 150 शब्दों में लिखिए।

7. 'महानगरों में आवास की समस्या' विषय पर लगभग 150 शब्दों में फ़ीचर लिखिए। **5**

खण्ड–'ग'

8. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर, प्रत्येक 30 शब्दों में लिखिए : **2 ×4=8**

बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे-
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है।

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!
मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चंचल?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।

(क) किसके बच्चों की बात की गई है, वे नीड़ों से क्यों झाँक रहे हैं?

(ख) चिड़ियों की उड़ान में गति आने और कवि के शिथिल कदमों के क्या कारण हो सकते हैं?

(ग) कवि अपने आप से क्या प्रश्न करता है? क्यों?

(घ) 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है'—कथन की आवृत्ति क्या संकेत करती है?

अथवा

छोटा मेरा खेत चौकोना
काग़ज़ का एक पन्ना
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया नि:शेष
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।

(क) छोटे खेत और काग़ज़ का रूपक समझाइए।

(ख) रचना के संदर्भ में 'अंधड़' और 'बीज' से आप क्या समझते हैं?

(ग) कल्पना को रसायन क्यों कहा गया है?

(घ) 'पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष' - पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

9. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लगभग 30 शब्दों में लिखिए : $2 \times 3 = 6$

आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को ख़ड़ी
हाथों पे झुलाती है उसे गोद-भरी
रह-रह के हवा में जो लोका देती है
गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी।

(क) काव्यांश की भाषा पर टिप्पणी कीजिए।

(ख) काव्यांश का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

(ग) प्रयुक्त आलंकारिक सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए : $3 + 3 = 6$

(क) कवितावली से आपकी पाठ्य-पुस्तक में उद्धृत छंदों के आधार पर सोदाहरण स्पष्ट कीजिए कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमताओं की अच्छी समझ है।

(ख) 'कविता के बहाने' कविता में कविता और बच्चे को समानांतर रखने के क्या कारण हो सकते हैं?

(ग) बादलों के आगमन से प्रकृति में होने वाले किन-किन परिवर्तनों को 'बादल राग' कविता रेखांकित करती है?

11. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 30 शब्दों में लिखिए : $2 \times 4 = 8$

बाज़ार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है। जेब ख़ाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन खाली है तो बाज़ार की अनेकानेक चीज़ों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं हुई उस वक्त जेब भरी, तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है! मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ। सभी सामान ज़रूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। पर यह सब जादू का असर है।

(क) 'बाज़ार में एक जादू है' कथन का क्या आशय है? यह जादू कैसे काम करता है?

(ख) इस जादू की मर्यादा क्या है? स्पष्ट कीजिए।

(ग) मन ख़ाली होने का क्या अर्थ है? इसका परिणाम क्या होता है?

(घ) मन पर जादू का असर कब और कैसे दिखाई देता है?

12. निम्नलिखित में से किन्हीं *चार* प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 30-40 शब्दों में लिखिए : **3 × 4 = 12**

(क) 'काले मेघा पानी दे' के आधार पर जीजी की दृष्टि में त्याग और दान को परिभाषित कीजिए।

(ख) पहलवान की ढोलक की आवाज़ का पूरे गाँव पर क्या असर होता था? कैसे?

(ग) आपके विचार से चार्ली चैप्लिन की सर्व-स्वीकार्यता के क्या कारण हो सकते हैं?

(घ) 'नमक' कहानी की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

(ङ) शिरीष और महात्मा गाँधी की तुलना किस आधार पर की गई है?

13. भूषण के द्वारा ऊनी ड्रेसिंग गाउन देने पर यशोधर पंत के मन में उत्साह का अभाव किन जीवन मूल्यों की उपेक्षा के कारण दिखाई देता है? बुजुर्ग पीढ़ी हमसे क्या अपेक्षा करती है? (लगभग 150 शब्दों में लिखिए) **5**

14. (क) आपके विचार से पढ़ाई-लिखाई के सम्बन्ध में 'जूझ' के लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था या लेखक के पिता का? लगभग 150 शब्दों में तर्क सहित उत्तर दीजिए। **5**

(ख) "सिंधु-सभ्यता साधन-संपन्न थी, पर उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था।" सोदाहरण पुष्टि कीजिए। (लगभग 150 शब्दों में) **5**

●●

सी.बी.एस.ई. अंक योजना
बोर्ड द्वारा प्रेषित

खण्ड–'क'

1. (क)
- भाषा के मुद्दे से लाभ लेने वाले राजनैतिक सोच वाले लोग **1+1=2**
- हिंदी के विषय में या उसके विरोध में जब कोई हलचल होती है

(ख)
- भारत गणतंत्र/भारत सरकार, हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए और उसका विकास करे

[सी. बी. एस. ई. अंक योजना, 2018] 2

व्याख्यात्मक हल :

संविधान में 'संघ' का अर्थ विभिन्न राज्यों के मेल से बने भारत के संघीय रूप से है। हिन्दी भाषा को लेकर संघ का यह कर्त्तव्य बताया गया है कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे। **1+1=2**

(ग)
- अंग्रेजी भाषा की मानसिकता से उबरने के लिए
- अपनी भाषा की अस्मिता बचाने और भविष्य के संकट से उबरने के लिए

(अन्य उपयुक्त बिन्दु भी स्वीकार्य)

(घ)
- हिंदी के अतिरिक्त अन्य वे भाषाएँ जो संविधान में उल्लिखित हैं
- उनके रूप, शैली, शब्द भंडार आदि से हिंदी को सम्पन्न करना **[सी. बी. एस. ई. अंक योजना, 2018] 2**

व्याख्यात्मक हल :

भारत की अन्य भाषाओं से लेखक का तात्पर्य उन अन्य 22 भारतीय भाषाओं से है जिन्हें संविधान की आठवीं अनुसूची में शमिल किया गया है। यहाँ उनका उल्लेख इसलिए किया गया है ताकि हिन्दी को समृद्ध व अहिन्दी भाषियों द्वारा भी ग्राह्य बनाया जा सके।

(ङ)
- अंग्रेजी भाषा और उसका प्रयोग करने वाले का अधिक महत्व
- मानसिक गुलामी, हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं का भविष्य खतरे में पड़ना

[सी. बी. एस. ई. अंक योजना, 2018] 2

व्याख्यात्मक हल :

'अंग्रेजी भाषा की मानसिकता' से तात्पर्य है कि वर्तमान में अंग्रेजी भाषी लोगों को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। अंग्रेजी भाषा को अपनाने की होड़ मची हुई है। जिसके परिमाणस्वरूप हमारी युवा व किशोर पीढ़ी उसके अंधानुकरण में लग गयी है और हमारी भारतभूमि में जन्मी हमारी अपनी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में पड़ गया है।

(च) • शिक्षा, व्यापार, सरकारी कार्यालयों और व्यवहार में हिंदी को महत्व न मिलना
• युवा पीढ़ी पर अंग्रेजी मानसिकता हावी **[सी. बी. एस. ई. अंक योजना, 2018] 2**

व्याख्यात्मक हल :

आज हम भारतीय अपनी प्रादेशिक व राष्ट्रीय भाषा के प्रति संकीर्ण मानसिकता से ग्रस्त हैं। अंग्रेजी भाषा की मानसिकता के गुलाम हो रहे हैं। अपने भाषा-भाषी लोगों को हीनदृष्टि से देखते हैं। अंग्रेजी भाषा को जीवन में सफलता के लिए आवश्यक व अपनी भाषा को पिछड़ेपन का सूचक मानने लगे हैं जिससे हमारी अपनी भाषा का भविष्य, संकट में लग रहा है।

(छ) • हिंदी और प्रादेशिक भाषाओं के प्रयोग से विभिन्न क्षेत्रों में उन्हें बढ़ावा मिलना
• शिक्षा, व्यापार एवं दैनिक व्यवहार में अधिक से अधिक प्रयोग करके
(अन्य भी स्वीकार्य) **[सी. बी. एस. ई. अंक योजना, 2018] 2**

व्याख्यात्मक हल :

हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं के वर्चस्व से तात्पर्य है कि हम अपनी अभिव्यक्ति चाहे वह मौखिक हो या लिखित, का माध्यम भारतीय भाषाओं को ही बनाएँ व अपनी भाषाओं का प्रयोग गर्व के साथ करें। यह तभी सम्भव है जब हम शिक्षा में और व्यवहार में, संसदीय, शासकीय और न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को प्रमुखता दें।

(ज) "हिर्दी भाषा'', (अन्य उपयुक्त शीर्षक भी स्वीकार्य) 1

2. (क) • असहाय होकर क्षमा करने पर कलंक ½ +½=1
• क्षमतावान होने पर भी क्षमा करने से शृंगार **[सी. बी. एस. ई. अंक योजना, 2018]**

व्याख्यात्मक हल :

(क) जो व्यक्ति कायर है और प्रहार सहने को विवश है उसके द्वारा शत्रु को क्षमा करना वीर जाति पर कलंक के समान है, इसके विपरीत सामर्थ्यवान, वीर पुरुषों के द्वारा शत्रु को क्षमा करना उसका शृंगार है।

(ख) • बदला लेना ½ +½=1
• आत्मसम्मान की रक्षा हेतु

(ग) • विजयी होकर भी क्षमा करना विभूषण ½ +½=1
• पराजित होकर सहष्णिुता दिखाना अभिशाप है **[सी. बी. एस. ई. अंक योजना, 2018]**

व्याख्यात्मक हल :

विजेता के लिए सहिष्णुता जहाँ विभूषण के समान है; उसका शृंगार है वहीं हारी हुई जाति व शूरता के अग्निताप से शून्य मनुष्य के सहिष्णुता अभिशाप के समान है।

(घ) लोभ और स्वार्थवश किया गया युद्ध

(ङ) पराक्रम व नीति युक्त लड़ाई ही धर्मयुद्ध है

3. **किसी एक विषय पर अनुच्छेद लेखन**
• आरंभ और समापन 2
• विषय वस्तु 2
• भाषा **[सी. बी. एस. ई. अंक योजना, 2018]** 1

व्याख्यात्मक हल :

(क) कम्प्यूटर : मेरे जीवन में

कम्प्यूटर आधुनिक विज्ञान का अद्भुत करिश्मा है जिसने सारे विश्व को अपने आकर्षण में जकड़ लिया है। कोई वैज्ञानिक प्रतिष्ठान हो या औद्योगिक प्रतिष्ठान, बैंक हो या बीमा निगम, रेलवे स्टेशन हो या बस डिपो हर जगह इसका बोलबाला है। यही स्कूल-कॉलेजों में विद्यार्थियों की रुचि का केन्द्र है। सबकी तरह मैं भी कम्प्यूटर के प्रभाव से अछूता नहीं हूँ। कम्प्यूटर ने मेरे जीवन को जहाँ रफ़्तार दी है वहीं इसे आरामदायक भी बना दिया है। शिक्षा से सम्बन्धित कैसी भी जानकारी प्राप्त करना बहुत सरल हो गया है। परिवार, रिश्तेदारों, मित्रों आदि से सम्पर्क बनाए रखना हो या बिजली, टेलीफोन आदि के बिल जमा करने हों। तो कम्प्यूटर के द्वारा घर बैठे हो सकते हैं। कम्प्यूटर के कारण भारी-भरकम पुस्तकों को रखने, सँभालने और उन्हें उलटने-पुलटने की आवश्यकता खत्म होती जा रही है। इंटरनेट ने सारे विश्व को एक पाठशाला में बदल देने की शक्ति दिखा दी है। कम्प्यूटर

के कारण मैं किसी भी प्रकार की लम्बी से लम्बी गणना बिना किसी त्रुटि के कुछ ही पलों में कर लेता हूँ। जब कभी थक जाता हूँ या बोरियत महसूस करता हूँ तो कम्प्यूटर पर चलचित्र देख लेता हूँ या मनपसंद गाने सुन लेता हूँ। इससे अकेलेपन का एहसास भी नहीं होता। घर से दूर परदेस में यह एक सच्चे मित्र की भाँति मेरा साथ देता है। परिवार को पैसे भेजने का कार्य भी कम्प्यूटर सुगमता से कर देता है। घर जाने के लिए रेल का टिकट कराना हो या हवाई-जहाज का, कम्प्यूटर के द्वारा सुविधापूर्वक किया जा सकता है। वस्तुत: आज के समय में कम्प्यूटर हमारे घर के एक सदस्य की तरह हमारा साथ निभा रहा है।

(ख) भारत की सामाजिक समस्याएँ

भारत एक विशाल देश है जहाँ विभिन्न धर्मों, जातियों व वेश-भूषाओं को धारण करने वाले लोग निवास करते हैं। दूसरे शब्दों में अनेकता में एकता हमारी पहचान और हमारा गौरव है परन्तु अनेकता अनेक समस्याओं की जननी भी है।

प्राय: जाति, भाषा, रहन-सहन व धार्मिक विभिन्नताओं के बीच सामंजस्य रखना दुष्कर हो जाता है। विभिन्न धर्मों व सम्प्रदायों के लोगों की विचारधाराएँ भी भिन्न-भिन्न होती हैं। देश में व्याप्त प्रांतीयता, भाषावाद, सम्प्रदायवाद या जातिवाद इन्हीं विभिन्नताओं का दुष्परिणाम है। इसके चलते आज देश के लगभग सभी राज्यों से दंगे-फसाद, मारकाट, लूट-खसोट आदि के समाचार प्राय: सुनने व पढ़ने को मिलते हैं। नारी के प्रति अत्याचार, दुराचार तथा बलात्कार का प्रयास हमारे समाज की एक शर्मनाक समस्या है। केवल अशिक्षित ही नहीं अपितु हमारे कथित सभ्य-शिक्षित समाज में भी दहेज का जहर व्याप्त है। प्रतिदिन कितनी ही भारतीय नारियाँ दहेज-प्रथा के कारण दहेज लोभियों की बर्बरता का शिकार हो जाती हैं अथवा जिंदा जला दी जाती हैं।

अंधविश्वास व रूढ़िवादिता जैसी सामाजिक बुराई देश की प्रगति को पीछे धकेल देती है। अंधविश्वास व रूढ़िवादिता हमारे देश के नवयुवकों को भाग्यवादिता की ओर ले जाती है फलस्वरूप वे कर्महीन हो जाते हैं।

भ्रष्टाचार भी हमारे देश में एक जटिल समस्या का रूप ले चुका है। सामान्य कर्मचारी से लेकर ऊँचे-ऊँचे पदों पर आसीन अधिकारी तक सभी भ्रष्टाचार के पर्याय बन चुके हैं। भ्रष्टाचार के परिणामस्वरूप देश में महँगाई और कालाबाजारी के जहर का स्वच्छंद रूप से विस्तार हो रहा है। जातिवाद की जड़ें समाज में बहुत गहरी हो चुकी हैं। ये समस्याएँ आज की नहीं हैं अपितु सदियों से पनप रही हैं। इसके परिणामस्वरूप पनपी सामाजिक विषमता देश के विकास में बाधक हैं। इसके अतिरिक्त देश में फैली अशिक्षा और निर्धनता जैसी सामाजिक समस्याओं के रहते कोई भी देश वास्तविक रूप में विकास नही कर सकता।

(ग) स्वाभिमान चाहिए, अभिमान नहीं

स्वाभिमान और अभिमान ये दोनों मनुष्य के चरित्र को परिभाषित करते हैं। जहाँ स्वाभिमान उसके उच्च व्यक्तित्व का उदात्त अंग कहलाता है वहीं अभिमान उसके पतन का कारण बनता है। स्वाभिमान मनुष्य का गुण बन जाता है और अभिमान उसका अवगुण कहलाता है।

स्वाभिमान ही प्रत्येक मनुष्य का आभूषण है। यह हर व्यक्ति के अंतस में विद्यमान उसका प्रिय मित्र होता है। स्वाभिमान रूपी पूँजी जिसके पास नहीं होती वह मृतप्राय होता है उसे हर कोई रौंदता हुआ आगे बढ़ जाता है। इसी प्रकार जिस देश के लोगों में स्वाभिमान का भाव नहीं होता उस राष्ट्र को कोई भी शत्रु-देश आक्रमण करके सरलता से अपने अधीन कर लेता है। इसके विपरीत अभिमान मनुष्य का वह अवगुण है जो व्यक्ति के सिर चढ़कर बोलता है। यह मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। मनीषियों का कथन है कि अहंकारी कितने भी ऊँचे बोल क्यों न बोल ले उसका अंत हमेशा बुरा ही होता है।

मनस्वी व्यक्ति का एक मात्र धन स्वाभिमान होता है। निम्न सूक्ति में यही कहा है—

'मोना हि महतां धनम्'

स्वाभिमानी मनुष्य मृत्यु तुल्य कष्टों का भी हँसकर सामना कर लेते हैं। वे अपने स्वाभिमान का सौदा कभी भी किसी भी मूल्य पर नहीं करते। ऐसे स्वाभिमानियों से तो बड़े-बड़े साम्राज्य भी थर-थर काँपते हैं। वे जानते हैं कि ऐसे लोग अपने लिए कभी समझौता नहीं करते।

वहीं अभिमानी लोग खुद तो डूबते ही हैं अपने साथियों को भी डुबाने का अपराध करते हैं। वे इस तथ्य को भूल जाते हैं—

"घमंडी का सिर नीचा।"

अभिमानी का अन्त सदैव बुरा होता है जैसे रावण और हिरण्यकश्यप जैसे अभिमानियों का हुआ। अत: हमें स्वाभिमानी बनना चाहिए, अभिमानी नहीं।

(घ) विकास के लिए शिक्षा आवश्यक

शिक्षा अपने चारों ओर की चीजों को सीखने की प्रक्रिया है यह हमें किसी भी वस्तु या परिस्थिति को आसानी से समझने, किसी भी समस्या से निपटने और जीवन भर विभिन्न आयामों में संतुलन बनाए रखने में मदद करती है। शिक्षा के बिना हम अधूरे हैं और हमारा जीवन बेकार है, शिक्षा के बिना मनुष्य अपना विकास नहीं कर सकता है। शिक्षा से मनुष्य का बौद्धिक विकास होता है जिसके बल पर वह आत्मनिर्भर बन अपना आर्थिक विकास कर सकता है। किसी भी देश या जाति के विकास के लिए भी शिक्षा उतनी ही आवश्यक है जितनी मानव के व्यक्तिगत विकास के लिए। इसीलिए हमारे देश में 'पढ़े इंडिया, बढ़े इंडिया' जैसे-शिक्षा कार्यक्रमों को आगे बढ़ाया जा रहा है। यह सामाजिक विकास, आर्थिक समृद्धि और तकनीकी उन्नति का सही रास्ता है। शिक्षा वैज्ञानिकों की, शोधकार्यों में; यांत्रिक मशीनों आधुनिक जीवन के आवश्यक अन्य तकनीकियों के आविष्कार में सहायता करती है। यह समाज में सामान्य संस्कृति और मूल्यों को विकसित करती है। इस तरह देश शिक्षा के द्वारा अपने चहुँमुखी विकास की ओर अग्रसर होता है।

4. **पत्र-लेखन**
- आरंभ और अंत की औपचारिकताएँ 1
- विषय वस्तु 3
- भाषा प्रस्तुति **[सी. बी. एस. ई. अंक योजना, 2018]** 1

व्याख्यात्मक हल :

सेवा में,

प्रधान प्रबंधक/निदेशक

दूरदर्शन महानिदेशालय

दूरदर्शन केन्द्र, नई दिल्ली

विषय—नवीन साहित्यिक रचनाओं पर कार्यक्रम प्रसारित करने हेतु

मान्यवर,

विनम्रता पूर्वक निवेदन यह है कि मैं आपके निदेशालय के अंतर्गत दूरदर्शन पर प्रसारित किए जाने वाले प्रत्येक कार्यक्रम का नियमित दर्शक हूँ। आपके चैनल पर प्रसारित लगभग सभी कार्यक्रम सभ्यता, शिष्टता तथा समाज के अनुकूल होते हैं। आपके चैनल पर पुरानी साहित्यिक रचनाओं पर आधारित कार्यक्रम जैसे—'रंजनी', 'अलिफ़ लैला', 'पंचतंत्र की कहानियाँ' आदि प्रसारित होते रहे है वैसे ही नवीन साहित्यिक रचनाओं पर भी कार्यक्रम प्रसारित करें ताकि दर्शक नवीन साहित्य के बारे में जानकारी प्राप्त कर लाभान्वित हो सकें और साहित्य-रचना हेतु प्रेरणा भी प्राप्त कर सकें।

अत: आपसे निवेदन है कि समाज के युवा-वर्ग का मार्गदर्शन करने हेतु नवीन साहित्यिक रचनाओं पर आधारित कार्यक्रमों के प्रसारण को आप प्रोत्साहन प्रदान करेंगे।

सधन्यवाद।

भवदीय

राजेश शर्मा

42, सुरक्षा विहार

मेरठ, उ. प्र.

दिनांक .....

5. **(क)** फैशन, ग्लैमर, अमीरों की पार्टियों और लोकप्रिय जाने-माने लोगों के जीवन की जानकारी देने वाली सामग्री

(ख) किसी समाचार संगठन के लिए दिए गए काम के अनुसार निश्चित मानदेय पर काम करना

(ग)
- किसी विशेष क्षेत्र जैसे-कृषि, विज्ञान, तकनीकी, व्यापार आदि की तह में जाकर उसका अर्थ स्पष्ट करना, मुद्दों,
- समस्याओं का सूक्ष्म विश्लेषण करना, आम पाठक को उसका महत्व बताना

(घ) संवाददाताओं के बीच उनकी जानकारी और रुचि के आधार पर किए गए कार्य-विभाजन

(ङ)
- सस्ता व सुलभ साधन
- अन्य कार्य करते हुए भी रेडियो का उपयोग संभव
- व्यापक प्रसार, दूर-दराज के क्षेत्रों तक पहुँच
- अनपढ़ लोगों के लिए भी उपयोगी
- अपनी पसंद से कहीं भी, कभी भी सुन सकते हैं

(कोई दो बिंदु अपेक्षित)

6. **आलेख लेखन**
- विषय वस्तु 2
- प्रस्तुतीकरण 2
- भाषा 1

अथवा

पुस्तक समीक्षा लेखन
- पुस्तक व लेखक का नाम 1
- विषय-वस्तु 3
- भाषा एंव प्रस्तुति **[सी. बी. एस. ई. अंक योजना, 2018]** 1

व्याख्यात्मक हल :

गाँव से मज़दूरों का पलायन

गाँव के मजदूर बेरोजगारी व गरीबी की वजह से महानगरों की ओर पलायन कर रहे हैं। इससे दो दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं पहला—गाँव से शहरों में गए मजदूरों को कम मजदूरी पर कठोर परिश्रम करना पड़ता है जिससे उनका स्वास्थ्य ख़राब होता है दूसरे मजदूरों के शहर में पलायन कर जाने से गाँव में विकास की गति धीमी होती जा रही है। कृषि कार्य आदि के लिए मजदूर न मिलने से कृषि-योग्य भूमि खाली पड़ी रहती है। भारत सरकार को प्रत्येक गाँव में ग्रामीण रोजगार योजना चलानी चाहिए तथा कुटीर उद्योगों को विकसित करना चाहिए। इससे शहरों की ओर होने वाला ग्रामीण पलायन कम होगा। गाँव के मजदूर अपने घरों में रहकर ही धनोपार्जन कर सकेंगे जिससे शहरों पर पड़ने वाला अधिक जनसंख्या दबाव भी कम हो सकेगा।

अथवा

पुस्तक समीक्षा

'शेखर पाठक' द्वारा रचित पुस्तक 'नीले बर्फीले स्वप्न लोक में' एक यात्रा-वृत्तान्त के रूप में शुरू होती है। लेकिन धीरे-धीरे लेखक के अन्दर का इतिहासकार बाहर आता है और ऐतिहासिक घटनाओं से आपका परिचय करवाता है।

शुरुआत में कहानी थोड़ी बोझिल हो जाती है क्योंकि गाँव की घाटियों, फूल-पत्तों-पेड़ों के नाम समझना सबके वश की बात नहीं। लेकिन लेखक ने जिस कुशलता से नदियों की व्याख्या की है वह सराहनीय है। मानो उसने सब देखा जाना हो। लेकिन जैसे ही कहानी उत्तराखण्ड से आगे तिब्बत की ओर बढ़ती है वैसे ही कहानी में तेजी और आनंद दोनों बढ़ जाता है। तिब्बत के पठार, नंगे पहाड़ और इधर-उधर भागती नदियाँ आपको भी वादियों में ले जाती हैं। तब समझ में आता है कि क्यों चीन ने वहाँ सड़कें बनवा लीं।

मानस की पहली झलक, कैलाश के दर्शन की कथा को लेखक ने ऐसी खूबसूरती से दिखाया है। मानो कैलाश की परिक्रमा लगा रहे हों।

'शेखर पाठक' का तिब्बत और बुद्ध धर्म के प्रति लगाव साफ दिखाई देता है। तिब्बत की वेदना को समझने के लिए जो सवाल अपने मन में वे लिए घूमते हैं, शायद आपके मन में भी वे सवाल घर कर जायेंगे। कैलाश के पर्वतारोहण का इतिहास भी बखूबी समझाया गया है इस भाग को खासकर पर्वतारोही खूब पसन्द करेंगे। बौद्ध, जैनी, हिन्दू और बोनवा, सब लोग कैलाश यात्रा करते हैं लेकिन क्यों? इसका लिखित इतिहास क्या है इसकी सतही जानकारी भी इस पुस्तक में मिल जाएगी।

7. **फीचर लेखन**
- विषय वस्तु 2
- प्रस्तुतीकरण 2
- भाषा **[सी. बी. एस. ई. अंक योजना, 2018]** 1

व्याख्यात्मक हल :

महानगरों में आवास की समस्या

महानगरों से तात्पर्य उन बड़े नगरों से है जिनकी आबादी लाखों में है और प्रतिवर्ष हजारों व्यक्ति यहाँ आकर इनकी जनसंख्या में बढ़ोत्तरी कर देते हैं। गाँवों से महानगरों की ओर यह पलायन रोजी-रोटी (रोजगार), शिक्षा, सुरक्षा प्राप्त करने के लिए होता है। महानगरों का सामान्य अभिप्राय दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता, चेन्नई, बेंगलुरू आदि नगरों से है जहाँ प्रतिवर्ष आस-पास के गाँवों से ही नहीं अपितु सुदूर प्रान्तों से रोजगार पाने के लिए हजारों, लाखों व्यक्ति इन महानगरों में आते हैं और यहीं बस जाते हैं। जिसके कारण महानगरों में आवास की समस्या विकराल रूप धारण करती जा रही है। महानगरों में आवास किराए पर भी उपलब्ध हो पाना कठिन है और जो आवास उपलब्ध हैं उनका किराया बहुत अधिक है परिणामत: लोग झुग्गी-झोपड़ियों में रहने को विवश हैं। लाखों नागरिक इन महानगरों में खुले आसमान के नीचे सड़कों के किनारे बनी पटरियों पर रहते हैं। ऐसी अस्वस्थ परिस्थितियों में रहने के कारण तरह-तरह की बीमारियों से ग्रस्त भी हो जाते हैं। हमारी सरकार को चाहिए कि इस समस्या का समाधान करने के लिए गाँवों से शहरों की ओर होने वाले पलायन को रोकना चाहिए और गाँवों में ही बड़े उद्योगों की स्थापना कर रोजगार के साधन उपलब्ध कराएँ।

खण्ड-'ग'

8. (क) (बच्चे ----------है।) 1+1=2
- चिड़िया के;
- माता-पिता और भोजन की प्रतीक्षा में

(ख) • चिड़िया को भूखे बच्चों से मिलने की उत्सुकता 1+1=2
• कवि की प्रतीक्षा करने वाला कोई नहीं

(ग) • मुझसे मिलने को कौन बेचैन है, मेरे मन में उत्साह क्यों हो 1+1=2
• अकेलेपन के कारण

(घ) • समय परिवर्तनशील है, गतिमान है 1+1=2

अथवा

(क) **(छोटा --------विशेष)** 1+1=2
• खेत और पन्ना दोनों चौकोर
• खेत में बीज डाल कर फसल उगाते हैं कविता में किसी एक विचार पर कविता लेखन
• अन्न क्षुधापूर्ति करता है, काव्य-रस असीम आनंद प्रदान करता है
(कोई दो बिंदु)

(ख) • भावों और विचारों की आँधी; उन्हीं भावों विचारों से कविता का निर्माण 1+1=2

[सी. बी. एस. ई. अंक योजना, 2018]

व्याख्यात्मक हल :

रचना के संदर्भ में 'अंधड़' से आशय भावनाओं की आँधी, मन में विचारों की उथल-पुथल से है, जो काव्य-रचना के लिए कवि को प्रेरित करती है। बीज का अर्थ रचना के सन्दर्भ में प्रयुक्त किए गए शब्दों से है। मन के भावों को लेखनीबद्ध करने के लिए कवि कागज रूपी खेत पर शब्दों के बीज बिखेरता है जो कल्पना के रयासन से समृद्ध होकर कविता में बदल जाते हैं।

(ग) जैसे बीज के विकास में रसायन की भूमिका वैसे ही किसी भाव या विचार को विकसित करने में कल्पना की भूमिका महत्वपूर्ण

(घ) जैसे पौधा पल्लवित और पुष्पित होकर झुक जाता है और बीज गल जाता है उसी प्रकार कवि का अहम् नष्ट होते ही रचना सर्वजन-हिताय हो जाती है और शब्दों के अंकुर फूटते ही रचना भी नमित हो जाती है 1+1=2

9. (क) • (आँगन.....हँसी।) 1+1=2
• खड़ी-बोली
• हिंदी-उर्दू मिश्रित शब्दावली
• चित्रात्मक भाषा
• चाँद का टुकड़ा जैसे मुहावरों से भाषा में सहजता व माधुर्य
• लोका देना- आंचलिक शब्द का प्रयोग
• रूबाई छंद
(कोई दो बिंदु स्वीकार्य)

(ख) वात्सल्य भाव स्पष्ट, माँ अपने बेटे को गोद में लेकर झुला रही है बच्चा किलकारी मार रहा है, माँ और बेटा दोनों खुश 2

(ग) स्वभावोक्ति अलंकार - माँ द्वारा बच्चे को झुलाना, लोका देना, बच्चे का हँसना, पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार - रह-रह, रूपक अलंकार-चाँद के टुकड़े 1+1=2
(किन्हीं दो का उल्लेख अपेक्षित)

10. (क) **किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित** 3
• किसान के पास खेती के साधन नहीं
• भिखारी को भीख नहीं
• नौकर जीविका विहीन
• व्यापारी का व्यापार चौपट
• कुछ लोग पेट भरने के लिए अपने बेटा-बेटी बेचते हैं
(कोई तीन बिंदु स्वीकार्य) **[सी. बी. एस. ई. अंक योजना, 2018]**

व्याख्यात्मक हल :

तुलसीदास ने अपने काव्य में समाज की आर्थिक स्थिति का विशद वर्णन किया है। वे अपने युग की समस्याओं व जनता की पीड़ा से अच्छी तरह परिचित थे। श्रमजीवी, किसान बनिया, भिखारी, दास, नौकर, जादूगर, शिकारी आदि सभी वर्ग अपनी भूख मिटाने

व जीविकोपार्जन हेतु परेशान थे। पेट की भूख मिटाने के लिए अत्याचार, अन्याय, ऊँच-नीच, नैतिक-अनैतिक कार्य करने से भी नहीं चकूते थे। यहाँ तक की अपने बच्चों को बेचने जैसा नीच कार्य भी करते थे।

(ख) • बच्चों के सपने असीम, कवि की कल्पना असीम **3**
• बच्चों के खेल सीमाहीन, कविता की उड़ान असीम
• कविता शब्दों का खेल, बच्चों के खेल में घर-बाहर , ऊँच-नीच आदि में कोई भेद नहीं

[सी. बी. एस. ई. अंक योजना, 2018]

व्याख्यात्मक हल :

'कविता के बहाने' कविता में कविता और बच्चे को समानांतर रखने का कारण यह है कि उन दोनों में पर्याप्त समानताएँ हैं। जिस प्रकार एक बच्चे में, असीम संभावनाएँ छिपी हैं, वे खेलते समय अपने-पराए, ऊँच-नीच का भेद मिटा देते हैं तथा दूसरों के साथ आत्मीयता का संदेश देती हैं।

(ग) • बादलों की गर्जना **3**
• बिजली का चमकना
• मूसलाधार वर्षा
• बीजों का अंकुरण
• छोटे-छोटे पौधे हवा के चलने से हाथ हिलाते जान पड़ते हैं
• कमल के फूल से जल की बूँदों का टपकना
• कीचड. का साफ होना

(कोई तीन बिंदु स्वीकार्य)

11. (क) • आकर्षण; **1+1=2**
• व्यक्ति को अपनी ओर सम्मोहित करता है
• खरीददारी के लिए ललचाता है

(ख) मर्यादा तब तक जब तक जेब भरी एवं मन खाली हो। मन के भरे होने पर बाजार के जादू का असर नहीं होता **2**

(ग) निश्चित न होना कि वास्तव में क्या खरीदना है ? **1+1=2**
अनावश्यक वस्तुओं की खरीददारी

(घ) • जेब भरी व मन खाली **1+1=2**
• सारा सामान आवश्यक लगना **[सी. बी. एस. ई. अंक योजना, 2018]**

व्याख्यात्मक हल :

जब मन खाली हो और जेब भरी हो तो बाज़ार के जादू के प्रभाव में आकर मन नहीं मानता। सभी समान जरूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। मन करता है कि सभी सामान ले लूँ।

12. (क) किन्ही ं चार प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित-
• परम आवश्यक वस्तु का त्याग ही सर्वोच्च दान है **1½+1½=3**
• मेंढक-मंडली पर चढ़ाया हुआ पानी देवता पर चढ़ाया गया अर्घ्य है जो बाद में कई गुना जल के रूप में मिलता है

[सी. बी. एस. ई. अंक योजना, 2018]

व्याख्यात्मक हल :

'काले मेघा पानी दे' में जीजी की दृष्टि में दान का स्वरूप बहुत ही सीधा, सरल व अर्थपूर्ण है। वास्तव में दान वह है जिससे दूसरों का हित हो। और बिना त्याग के दान नहीं होता। अर्थात् यदि हम किसी वस्तु को दान नहीं करेंगे तो फिर पाएँगे कैसे ? त्याग भावना से जो दान दिया जाता है उसी से फल की प्राप्ति होती है। जिस प्रकार किसान तीस-चालीस मन गेहूँ की पैदावार के लिए पहले अपने खेत में पाँच-छः सेर अच्छे गेहूँ की बुवाई करता है वैसे ही यदि हम इंदर सेना पर पानी फेंकेगे, पानी का अर्घ्य देंगे तो इन्द्र देवता हमारे दान से प्रसन्न होकर काले बादल देंगे जिससे खुशहाली आएगी। अतः जीजी की दृष्टि में त्याग व दान बहुत आवश्यक हैं।

(ख) • संजीवनी शक्ति का काम 1+1+1=3
• मनोबल बढ़ाना
• भय के सन्नाटे को चीरना,
• मृत्यु को सहज भाव से स्वीकार कर पाते थे [सी. बी. एस. ई. अंक योजना, 2018]

व्याख्यात्मक हल :

ढोलक की आवाज ही रात्रि की विभीषिका को चुनौती देती सी जान पड़ती थी। गांव में अर्द्धमृत औषधि, उपचार, पथ्य विहीन प्राणियों में ढोलक की आवाज संजीवनी शक्ति भरती थी। ढोलक की आवाज सुनते ही बूढ़े-बच्चे-जवानों की कमजोर आंखों के सामने दंगल का दृश्य नाचने लगता अतएव उन लोगों के बेजान-अगों में भी बिजली दौड़ जाती थी। ढोलक की आवाज को सुनकर मरते हुए प्राणियों को अपनी आंखें मूंदते समय कोई तकलीफ नहीं होती थी। गांव के लोग इस आवाज के कारण मृत्यु से भी नहीं डरते थे।

(ग) • वर्ण और वर्ग व्यवस्था को तोड़ा 3
• आम आदमी के जीवन के साथ सहज तारतम्य
• आम आदमी की संवेदना से जुड़ा होना
• जीवन की विडंबनाओं और विद्रूपता का संवेदनशील अंकन
• मानवीयता के करीब/दयामय
• कला के एकाधिकार को समाप्त करने के कारण
(कोई तीन बिंदु स्वीकार्य) [सी. बी. एस. ई. अंक योजना, 2018]

व्याख्यात्मक हल :

चार्ली चैप्लिन हर देश; हर उम्र और हर स्तर के दर्शकों की पसन्द बन गए। चार्ली में सबको अपनी छवि दिखती है वे किसी भी संस्कृति और देश के लोगों को विदेशी नहीं लगते। सब उनमें स्वयं को देखते हैं क्योंकि चार्ली की फिल्मों में आम आदमी के जीवन में घटने वाली प्रतिदिन की सामान्य घटनाओं को दर्शाया गया है। वह दूसरों पर हँसने का अवसर देने के स्थान पर स्वयं को अपने ऊपर हँसने का अवसर देते हैं जिसके कारण वे सर्व-स्वीकार्य हैं।

(घ) • भारत-पाक विभाजन की त्रासदी 3
• विस्थापितों का दर्द/भावनाओं की मार्मिक अभिव्यक्ति
• मातृभूमि के प्रति लगाव का राजनीति से कोई सरोकार नहीं
• अपने-अपने वतन से लगाव व प्रेम को दर्शाना
• राजनीतिक कारणों से जमीन का बँटवारा लेकिन भावनाओं का नहीं
(कोई तीन बिंदु स्वीकार्य) [सी. बी. एस. ई. अंक योजना, 2018]

व्याख्यात्मक हल :

'नमक' कहानी में भारत-पाक के बीच आरोपित भेदभाव के बीच मुहब्बत का नमकीन स्वाद है। यह ठीक है कि 'नमक' कहानी में भारत-पाक विभाजन के चलते व्यक्तियों के दिलों से प्रेम और सद्भावना के अंकुर प्रस्फुटित होते हैं। 'सिख बीबी' लाहौर को अपना वतन कहती है और वहीं सुनीलदास ढाका को अपना वतन। अर्थात् देशों के बीच लकीर खींच देने के बावजूद दिलों में निकटता सदैव बनी रही। धरती के बँटने से लोगों के दिल नहीं बँटें। दोनों तरफ मुहब्बत का नमकीन स्वाद पहले की तरह की घुला हुआ है। अत: भारत-पाक विभाजन के बाद विस्थापित पुनर्वासित जनों के दिलों को टटोलती हुई यह एक मार्मिक कहानी है।

(ङ) • दोनों बाहर से कठोर एवं दृढ़ लेकिन भीतर से कोमल 3
• प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अविचलित
• दोनों हानि -लाभ से परे [सी. बी. एस. ई. अंक योजना, 2018]

व्याख्यात्मक हल :

शिरीष तरु के अवधूत रूप के कारण लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने शिरीष की तुलना गाँधी जी से की है। जिस तरह शिरीष तरु अवधूत है, वह बाह्य परिवर्तन धूप, वर्षा, आँधी, लू सब में शांत बना रहता है और पुष्पित पल्लवित होता रहता है। उसी प्रकार महात्मा गाँधी भी मार-काट, अग्निदाह, लूट-पाट, खून-खच्चर के बवंडर के बीच स्थिर रह सकते थे। उनके व्यक्तित्व ने समाज को सिखाया कि आत्मबल, शारीरिक बल से कहीं ऊपर की चीज है। आत्मा की शक्ति है। जैसे शिरीष वायुमण्डल से रस खींचकर इतना कोमल, इतना कठोर हो सकता वैसे ही महात्मा गांधी भी कठोर-कोमल व्यक्तित्व वाले थे। यह वृक्ष और मनुष्य दोनों अवधूत थे।

13. • युवा पीढ़ी द्वारा बुजुर्गों की भावनाओं को नहीं समझ पाना 3+2=5
• भावनाओं की अपेक्षा वस्तु को महत्व देना
• जिम्मेदारियों का अहसास न होना
• आदर, सम्मान, आज्ञापालन, अनुशासन
• उनसे सलाह-मशवरा करने की अपेक्षा
• अन्य मूल्यों का पालन करने की अपेक्षा
(विद्यार्थियों द्वारा दिए गए अन्य उपयुक्त बिंदु भी स्वीकार्य) **[सी. बी. एस. ई. अंक योजना, 2018]**

व्याख्यात्मक हल :

'सिल्वर वैडिंग' कहानी के नायक यशोधर बाबू को उनके बेटे भूषण ने ड्रेसिंग गाउन उपहार में देकर कहा कि आप इसे पहनकर सवेरे दूध लेने जाया करें। वे अपने पुत्र से अपेक्षा करते थे कि शायद वह उनकी तकलीफों को देखकर यह कहेगा कि आप बुढ़ापे में दूध लेने न जाया करें, मैं ही दूध ले आऊँगा पर जब उसने ड्रेसिंग गाउन में दूध लाने की बात की तो वह उन्हें चुभ गई। पिता के सुख-दु:ख की पुत्र द्वारा उपेक्षा किए जाने व संवेदनहीन बने रहने के कारण बेटे के उपहार के प्रति यशोधर के मन में उत्साह का अभाव था। बुर्जुग-पीढ़ी युवा-पीढ़ी से सम्मान व अपनापन चाहती है। वह चाहती है कि युवा-पीढ़ी उनके सुख-दु:ख की भागीदार बने और उनके नजरिए का आदर करे। उनके अनुभवों की उपेक्षा न करें।

14. (क) विद्यार्थियों द्वारा दिए गए उपयुक्त उत्तर स्वीकार्य **[सी. बी. एस. ई. अंक योजना, 2018]** 5

व्याख्यात्मक हल :

हमारे विचार से पढ़ाई-लिखाई के सम्बन्ध में लेखक और दत्ताजी राव का रवैया सही था। लेखक पढ़ना चाहता था। पढ़ाई का वर्तमान युग में कितना महत्व है, वह जानता था लेकिन उसके पिता उसको पढ़ाना नहीं चाहते थे। वे चाहते थे कि लेखक खेती का पूरा काम सँभाले और वे मौज-मस्ती करे तथा रखमाबाई के पास पड़े रहें। लेखक के पढ़ने पर उनकी मौजमस्ती में अड़चन आती। उन्हें खेती का काम भी देखना पड़ता।

वहीं दत्ता जी राव के विचार पढ़ाई के बारे में आधुनिक थे। वे लेखक की पढ़ाई के पक्ष में थे। अत: उन्होंने लेखक में पढ़ाई की ललक देख लेखक को पाठशाला जाने की अनुमति दिलवायी। इस प्रकार लेखक और दत्ता जी राव का पढ़ाई-लिखाई के सम्बन्ध में रवैया पूर्णत: उचित था।

(ख) • शहर का व्यवस्थित ढाँचा
• मकानों की बनावट में सुविधाओं का ध्यान
• सड़कों की योजनाबद्ध बनावट, उचित चौड़ाई
• ग्रिड शैली
• ढकी नालियाँ
• स्नानागार
• नगर योजना वास्तुकला के अनुरूप
• विशिष्ट जल - व्यवस्था
• अन्न भंडारण
• हथियारों का न मिलना
• महल, मंदिर आदि में भव्यता का दिखाई न देना
(किन्हीं पाँच बिंदुओं का उल्लेख करते हुए उपयुक्त उत्तर स्वीकार्य) **[सी. बी. एस. ई. अंक योजना, 2018]**

व्याख्यात्मक हल :

सिन्धु-घाटी सभ्यता साधन-सम्पन्न थी किन्तु उसमें आडम्बर नहीं था। स्नान-घर, पूजा-स्थल, सामुदायिक भवन, तालाब, नालियाँ, सड़कें हर प्रकार के साधनों से भरी पड़ी थीं यहाँ खेती, पशुपालन, व्यापार, उद्योग-धंधे सब कुछ होता था किन्तु वहाँ फिर भी दिखावा या बनावटीपन नहीं था। वहाँ न तो भव्य राज प्रासाद थे, न संत महात्माओं की समाधियाँ और न भव्य राजमुकुट या हथियार। यहाँ मात्र सादगी पर भव्य कला का साम्राज्य छाया था।

सभ्यता का निर्माण भी बहुत व्यवस्थित तरीके से किया गया था।

●●